उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

RNI-NO-UTTBIL/2007/20700

3 रोडवेज कर्मियों को छह माह से नहीं मिला वेतन

वर्ष:12 | अंक:163 | देहरादून, गुरुवार, 10 जून, 2021 | पृष्ठ:08 | मूल्य:2/रु. प्रति

धान की अधिक पैदावारी और पादप रोगों से बचाव के दिये सुझाव

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ० उमाकांत त्रिपाठी ने किसान भाइयों को धान की फसल से अधिक पैदावार लेने के लिए पादप रोगों से बचाव हेतु समसामयिक सुझाव दिए हैं उन्होंने कहा कि यदि धान की खेती में समय रहते ध्यान न दिया जाए तो आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है डॉ० त्रिपाठी ने कहा कि बीमारी का उपचार बचाव, प्रतिरोधी क्षमता, साफ सफाई एवं टीकाकरण इत्यादि पर निर्भर करता है उन्होंने बताया कि मुख्यरूप किसान भाई धान की नर्सरी डालकर रोपाई करते हैं या फिर कुछ किसान भाई सीधी धान की बुवाई भी करते हैं इन दोनों तरह की खेती में बीज उपचार, भूमि शोधन एवं धान की खड़ी फसल में दवाइयों का छिड़काव बहुत आवश्यक है जिससे लगभग 15 से 20: आय बढ़ जाती है उन्होंने बताया कि धान में प्रमुख रोग सफेद रोग (नर्सरी में), जीवाणु झुलसा, भूरा धब्बा एवं खैरा रोग प्रमुखता से लगते हैं। उन्होंने बताया कि धान की फसल में जड़ एवं तना गलन की समस्या के रोकथाम हेतु ट्राइकोडरमा विरिडी नामक जैविक फफूंदी नाशक लाभप्रद पाया गया है ट्राइकोडरमा विरिडी से बीजों में अंकुरण अच्छा होकर फसलें फफूंद जनित रोगों से मुक्त रहती हैं डॉ० उमाकांत त्रिपाठी ने बताया कि धान की नर्सरी डालने की पूर्व धान को जीवाणु झुलसा रोग से बचाव हेतु 4 ग्राम स्ट्रैप्टोसाइक्लिन प्रति 25 किलोग्राम बीज को पानी में रात भर रखें तथा सुबह छाया में सुखाकर खेत में नर्सरी डाल देते हैं खैरा रोग की रोकथाम के लिए धान की नर्सरी में बुवाई से 10 से 14 दिन बाद 5 किलोग्राम जिंक सल्फेट एवं 20 किलोग्राम यूरिया 500 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए। उन्होंने धान की फसल को सफेद रोग से बचाव हेतु 4 किलोग्राम फेरस सल्फेट का छिड़काव करने के लिए कहा तथा अन्य रोगों हेतु 2 किलोग्राम जिंक मैग्नीज कार्बामेट व प्रोपिकोनाजोल 500 ग्राम को 500 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए तथा धान की पौध रोपाई के समय 5 ग्राम ट्राइकोडरमा विरिडी जैविक फफूंदी नाशक को प्रति लीटर पानी में घोलकर उसमें पौधों को डुबोकर रोपाई करने के लिए बताया इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी कहा कि बुवाई, रोपाई के पूर्व 2.5 किलोग्राम ट्राइकोडरमा विरिडी तथा 60 किलोग्राम गोबर की खाद में हल्की नमी के साथ 3 से 5 दिन तक छाया में रखकर प्रति हेक्टेयर खेत में मिलाना चाहिए डॉ० त्रिपाठी ने किसान भाइयों को यह भी बताया कि धान की फसल में रोगों के लक्षण दिखाई देने पर रसायनों, जैविक फफूंदी नासको का तुरंत छिड़काव करें उन्होंने यह भी कहा कि यदि रोग पूर्णतया समाप्त न हो तो 7 से 10 दिन के अंतराल पर पुनरू छिड़काव करें।

कानपुर देहात, शुक्रवार, 11 जून 2021

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

अमन यात्रा

8707095473

www.amanyatralive.com, www.amanyatra.in

5 कोरोना संकट के बीच यूपी की जीएसडीपी में बढ़ोतरी का अनुमान 6 इंग्लैंड की कप्तान हीदर नाइट ने कहा,

फसल में रोगों के लक्षण दिखाई देने पर रसायनों/ जैविक फफूंदी नासको का तुरंत छिड़काव करें

अमन यात्रा ब्यूरो

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉक्टर उमाकांत त्रिपाठी ने किसान भाइयों को धान की फसल से अधिक पैदावार लेने के लिए पादप रोगों से बचाव हेतु समसामयिक सुझाव दिए हैं। उन्होंने कहा कि यदि धान की खेती में समय रहते ध्यान न दिया जाए तो आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। डॉक्टर त्रिपाठी ने कहा कि बीमारी का उपचार बचाव, प्रतिरोधी क्षमता, साफसफाई एवं टीकाकरण इत्यादि पर निर्भर करता है। उन्होंने बताया कि मुख्यतः किसान भाई धान की नर्सरी डालकर रोपाई करते हैं। या फिर कुछ किसान भाई सीधी धान की बुवाई भी करते हैं इन दोनों तरह की खेती में बीज उपचार, भूमि शोधन एवं धान की खड़ी फसल में दवाइयों का छिड़काव बहुत आवश्यक है जिससे लगभग 15 से 20 आय बढ़ जाती है उन्होंने बताया कि धान में प्रमुख रोग सफेद रोग (नर्सरी में), जीवाणु झुलसा, भूरा धब्बा एवं खैरा रोग प्रमुखता से लगते हैं। उन्होंने बताया कि धान की फसल में जड़ एवं तना गलन की समस्या के रोकथाम हेतु ट्राइकोडरमा विरिडी नामक जैविक फफूंदी नाशक लाभप्रद पाया गया है। ट्राइकोडरमा विरिडी से बीजों में अंकुरण अच्छा होकर फसलें फफूंद जनित रोगों से मुक्त रहती हैं। डॉक्टर उमाकांत त्रिपाठी ने बताया कि धान की नर्सरी डालने की पूर्व धान को जीवाणु झुलसा रोग से बचाव हेतु 4 ग्राम स्ट्रैप्टोसाइक्लिन प्रति 25 किलोग्राम बीज को पानी में रात भर रखें तथा सुबह छाया में सुखाकर खेत में नर्सरी डाल देते हैं। खैरा रोग की रोकथाम के लिए धान की नर्सरी में बुवाई से 10 से 14 दिन बाद 5 किलोग्राम जिंक सल्फेट एवं 20 किलोग्राम यूरिया 500 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए। उन्होंने धान की फसल को सफेद रोग से बचाव हेतु 4 किलोग्राम फेरस सल्फेट का छिड़काव करने के लिए कहा तथा अन्य रोगों हेतु 2 किलोग्राम जिंक मैग्नीज कार्बामेट व प्रॉपिकोनाजोल 500 ग्राम को 500 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए। तथा धान की पौध रोपाई के समय 5 ग्राम ट्राइकोडरमा विरिडी जैविक फफूंदी नाशक को प्रति लीटर पानी में घोलकर उसमें पौधों को डुबोकर रोपाई करने के लिए बताया इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी कहा कि बुवाई /रोपाई के पूर्व 2.5 किलोग्राम ट्राइकोडरमा विरिडी तथा 60 किलोग्राम गोबर की खाद में हल्की नमी के साथ 3 से 5 दिन तक छाया में रखकर प्रति हेक्टेयर खेत में मिलाना चाहिए। डॉक्टर त्रिपाठी ने किसान भाइयों को यह भी बताया कि धान की फसल में रोगों के लक्षण दिखाई देने पर रसायनों/ जैविक फफूंदी नासको का तुरंत छिड़काव करें। उन्होंने यह भी कहा कि यदि रोग पूर्णतया समाप्त न हो तो 7 से 10 दिन के अंतराल पर पुनः छिड़काव करें।

किसानों को धान की फसल से अधिक पैदावार लेने के लिए पादप रोगों से बचाव के दिए सुझाव

11/06/2021

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. उमाकांत त्रिपाठी ने किसानों को धान की फसल से अधिक पैदावार लेने के लिए पादप रोगों से बचाव के लिए सुझाव देते हुए बताया कि धान की खेती में समय रहते ध्यान न देने से आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। कुछ किसान

धान की नर्सरी डालकर रोपाई करते हैं या फिर कुछ किसान सीधी धान की बुवाई करते हैं इन दोनों तरह की खेती में बीज उपचार, भूमि शोधन और धान की खड़ी फसल में दवाइयों का छिड़काव आवश्यक है जिससे लगभग 15 से 20 फ़ीसदी आय में बढ़ोत्तरी होती है। उन्होंने बताया कि धान में मुख्यता सफेद रोग, जीवाणु झुलसा, भूरा धब्बा एवं खैरा रोग लगते हैं।धान की फसल में जड़ एवं तना गलन की समस्या के रोकथाम के लिए ट्राइकोडरमा विरिडी नामक जैविक फफूंदी नाशक लाभप्रद है। धान की नर्सरी डालने के पहले धान को जीवाणु झुलसा रोग से बचाव के लिए 4 ग्राम स्ट्रैप्टोसाइक्लिन प्रति 25 किलोग्राम बीज को पानी में रात भर रखें तथा सुबह छाया में सुखाकर खेत में नर्सरी डाल देते हैं तथा खैरा रोग की रोकथाम के लिए धान की नर्सरी में बुवाई से 10 से 14 दिन बाद 5 किलोग्राम जिंक सल्फेट एवं 20 किलोग्राम यूरिया 500 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए। उन्होंने धान की फसल को सफेद रोग से बचाव के लिए 4 किलोग्राम फेरस सल्फेट का छिड़काव करने के लिए कहा तथा अन्य रोगों के लिए 2 किलोग्राम जिंक मैग्नीज कार्बामेट व प्रॉपिकोनाजोल 500 ग्राम को 500 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress https://worldkhabarexpress.media/

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

अंक : 255 कानपुर नगर

10 जून 2021, गुरुवार

www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpress.com

महाभारत से प्रेरित फिल्म में द्रौपदी का किरदार निभा सकती है रिया! पेज 8

सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष ने किसानों को दिए टिप्स;

धान की खेती पर समय रहते दें ध्यानः डॉ. उमाकांत

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय (सीएसए) के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. उमाकांत त्रिपाठी ने किसानों को धान की फसल से अधिक पैदावार लेने के लिए प्रमुख रोगों से बचाव के लिए समसामयिक सुझाव दिए हैं। उन्होंने कहा कि यदि धान की खेती में समय रहते ध्यान न दिया जाए तो आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। बीमारी का उपचार बचाव, प्रतिरोधी प्रजाति, साफ-सफाई व टीकाकरण पर निर्भर करता है। उन्होंने बताया कि मुख्यतः किसान, धान की नर्सरी डालकर रोपाई करते हैं या फिर कुछ किसान, सीधी धान की बुवाई भी करते हैं। इन दोनों तरह की खेती में बीज उपचार, भूमि शोधन और धान की खड़ी फसल में दवाओं का छिड़काव बहुत आवश्यक है जिससे लगभग 15 से 20 फीसद उपज बढ़ जाती है। उन्होंने बताया कि धान में प्रमुख रोग सफेद रोग (नर्सरी में), जीवाणु झुलसा, भूरा धब्बा और खैरा रोग लगते हैं। धान की फसल में जड़ और तना गलन की समस्या के रोकथाम के लिए ट्राइकोडर्मा विरिडी नामक जैविक फफूंदी नाशक लाभदायक पाया गया है। ट्राइकोडर्मा विरिडी से बीजों में अंकुरण अच्छा होकर फसलें फफूंद जनित रोगों से मुक्त रहती हैं। धान की नर्सरी डालने के पूर्व, धान को जीवाणु झुलसा रोग से बचाव के लिए 4 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन प्रति 25 किलोग्राम बीज को पानी में रात भर रखें और सुबह छाया में सुखाकर खेत में नर्सरी डाल दें। खैरा रोग की रोकथाम के लिए धान की नर्सरी में बुवाई से 10 से 14 दिन बाद 5 किलोग्राम जिंक सल्फेट और 20 किलोग्राम यूरिया 500 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए। उन्होंने धान की फसल को सफेद रोग से बचाव के लिए 4 किलोग्राम फेरस सल्फेट का छिड़काव करने के लिए कहा। अन्य रोगों के लिए 2 किलोग्राम जिंक मैंगनीज कार्बामेट व स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 500 ग्राम को 500 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

धान की पौध रोपाई के समय 5 ग्राम ट्राइकोडर्मा विरिडी जैविक फफूंदी नाशक को प्रति लीटर पानी में घोलकर उसमें पौधों को डुबोकर रोपाई करने के लिए कहना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि बुवाई/रोपाई के पूर्व 2.5 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा विरिडी तथा 60 किलोग्राम गोबर की खाद में हल्की नमी के साथ 3 से 5 दिन तक छाया में रखकर प्रति हेक्टेयर खेत में मिलाना चाहिए। डॉ. त्रिपाठी ने किसानों को यह भी बताया कि धान की फसल में रोगों के लक्षण दिखाई देने पर रसायनों या जैविक फफूंदी नाशकों का तुरंत छिड़काव करें।

11 June 2021 satta express.pdf

आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष 12 अंक : 237 कानपुर देहात, शुक्रवार 11 जून 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com

वार्षिक कार्यशाला के पूर्व, सी एस ए के कृषि विज्ञान केंद्रों की समीक्षा बैठक संपन्न

प्रत्येक केवीके द्वारा 110 कृषकों की सफलता की कहानियां होंगी संकलित व प्रकाशित– कुलपति

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों की वर्ष 2020–21 की वार्षिक प्रगति आख्या एवं वर्ष 2021–22 की कार्य योजना का प्रसार निदेशालय में निदेशक प्रसारध्समन्वयक डॉक्टर ए के सिंह की अध्यक्षता में सभी केंद्रों के वरिष्ठ वैज्ञानिकों एवं अध्यक्ष द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। ज्ञात हो कि दिनांक 15 से 17 जून 2021 को प्रदेश की समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों की वार्षिक कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अटारी जोन 3 कानपुर द्वारा ऑनलाइन संपन्न कराया जाएगा। इस वार्षिक कार्यशाला में मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उप महानिदेशक (कृषि प्रसार) डॉ अशोक कुमार सिंह उपस्थित रहेंगे। जबकि अटारी जोन 3 के निदेशक डॉ अतर सिंह द्वारा कार्यशाला की अध्यक्षता की जाएगी। निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि वार्षिक कार्यशाला के पूर्व समीक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रगति आख्या एवं कार्य योजना में कमियों को ठीक करना है जिससे कि प्रस्तुतिकरण में कोई कमी न रह जाए। उन्होंने बताया की मुख्य तौर पर जनपदों की आवश्यकतानुसार कार्य योजना तैयार कराना है। जिससे संबंधित जनपदों के किसान लाभान्वित हों। इसके अतिरिक्त कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रक्षेत्रों की आय बढ़ाने हेतु तकनीकी कार्य योजना भी बनाई गई।जिसमें उर्द, मूंग, तिल के बीज उत्पादन के अतिरिक्त प्रक्षेत्रओं की मृदा उर्वरता बढ़ाने हेतु सुझाव दिए गए। डॉ ए के सिंह ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डीआर सिंह की मंशा के अनुसार प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा 110 कृषकों की सफलता की कहानियां संकलित की जाएंगी। साथ ही फार्मर्स डायरेक्टरी भी बनाया जाना सुनिश्चित किया गया है। इस अवसर पर सह निदेशक प्रसार डॉक्टर सुभाष चंद्रा, डॉ पीके राठी, डॉक्टर अनिल कुमार सिंह, डॉ एस बी पाल सहित समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

समस्त विभागध्यक्ष अपने अधिकारियों व कर्मचारियों का तत्काल लगवाये टीका- जिलाधिकारी

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस कानपुर देहात। 10 जून 2021

जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह ने समस्त जनपद स्तरीय अधिकारियों को अवगत कराया है कि जनपद में दिनांक 16 जनवरी 2021 से शासकीय कोविड वैक्सीनेशन सेन्टर(सी.वी.सी.) संचालित है और खेद का विषय है कि अभी भी जनपद में काफी संख्या में अधिकारियों व कर्मचारियों को कोविड–19 का टीकाकरण नहीं हुआ है। इससे यह स्पष्ट है कि शासकीय कोविड वैक्सीनेशन सेन्टर का पूर्णरूप से सदुपयोग नहीं हो रहा है जो खेदजनक स्थिति है। लॉकडाउन के बाद सरकारी कर्मचारियों द्वारा कार्यालय में आकर पूर्व की भाँति उसी गति से कार्य करना है ऐसी दशा में जिस विभाग के कर्मचारी वैक्सीनेशन से वंचित है, यदि दुर्भाग्यवश ऐसे कर्मचारी कोविड–19 के संक्रमण से ग्रसित होते है तो सम्बन्धित विभागाध्यक्ष की लापरवाही मानते हुए उत्तरदायित्व निर्धारित किये जाने पर विचारण किया जायेगा। जिलाधिकारी ने समस्त कार्यालयाध्यक्षोंधविभागाध्यक्षों को निर्देशित किया है कि अपने–अपने कार्यालय में कार्यरत अधिकारियोंध्कर्मचारियों के कोविड टीकाकरण की गहन समीक्षा कर लें और जो भी अधिकारीध्कर्मचारी अभी तक टीकाकरण से वंचित है उनका टीकाकरण तत्काल लगवाना सुनिश्चित करें।

@gmail.com, vidhankesarinews@gmail.com

हिन्दी दैनिक

विधान केसरी

...खबर सिर्फ जनहित के लिए

लखनऊ संस्करण, शुक्रवार 11 जून 2021 (वर्ष-8 अंक 350), मूल्य-2.00 रुपये पृष्ठ-17

विपरीत परिस्थितियों में भी... | योगी दिल्ली पहुंचे, शाह से मिले...

वार्षिक कार्यशाला के पूर्व आयोजित सीएसए कृषि विज्ञान केंद्रों की समीक्षा बैठक संपन्न

कानपुर नगर (विधान केसरी)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों की वर्ष 2020-21 की वार्षिक प्रगति आख्या एवं वर्ष 2021-22 की कार्य योजना का आज प्रसार निदेशालय में निदेशक प्रसार/समन्वयक डॉ. एके सिंह की अध्यक्षता में सभी केंद्रों के वरिष्ठ वैज्ञानिकों एवं अध्यक्ष द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। ज्ञात हो कि दिनांक 15 से 17 जून 2021 को प्रदेश की समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों की वार्षिक कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अटारी जोन 3 कानपुर द्वारा ऑनलाइन संपन्न कराया जाएगा। इस वार्षिक कार्यशाला में मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उप महानिदेशक (कृषि प्रसार) डॉ. अशोक कुमार सिंह उपस्थित रहेंगे। जबकि अटारी जोन-3 के निदेशक डॉक्टर अतर सिंह द्वारा कार्यशाला की अध्यक्षता की जाएगी। निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉ. एके सिंह ने बताया कि वार्षिक कार्यशाला के पूर्व समीक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रगति आख्या एवं कार्य योजना में कमियों को ठीक करना है जिससे कि प्रस्तुतिकरण में कोई कमी न रह जाए। उन्होंने बताया की मुख्य तौर पर जनपदों की आवश्यकतानुसार कार्य योजना तैयार कराना है। जिससे संबंधित जनपदों के किसान लाभान्वित हों। इसके अतिरिक्त कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रक्षेत्रों की आय बढ़ाने हेतु तकनीकी कार्य योजना भी बनाई गई। जिसमें उर्द, मूंग, तिल के बीज उत्पादन के अतिरिक्त प्रक्षेत्रओं की मृदा उर्वरता बढ़ाने हेतु सुझाव दिए गए। डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह की मंशा के अनुसार प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा 110 कृषकों की सफलता की कहानियां संकलित की जाएंगी साथ ही फार्मर्स डायरेक्टरी भी बनाया जाना सुनिश्चित किया गया है। इस अवसर पर सह निदेशक प्रसार डॉ. सुभाष चंद्रा, डॉ पीके राठी, डॉ. अनिल कुमार सिंह, डॉ एसबी पाल सहित समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

आगामी वर्ष की कार्य योजना का प्रस्तुतीकरण

11/06/2021

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अटारी जोन 3 कानपुर द्वारा 15 से 17 जून को प्रदेश के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की वार्षिक कार्यशाला का आयोजन कराया जाना है। जिसके लिए गुरुवार को सीएसएयू के अधीन संचालित सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की वर्ष 2020-21 की वार्षिक प्रगति आख्या एवं वर्ष 2021-22 की कार्य योजना का प्रस्तुतीकरण प्रसार निदेशालय में निदेशक प्रसार डॉ.ए.के. सिंह की अध्यक्षता में सभी केंद्रों के वरिष्ठ वैज्ञानिकों एवं अध्यक्ष द्वारा किया गया। इस वार्षिक कार्यशाला में मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उप महानिदेशक डॉ.अशोक कुमार सिंह तथा अध्यक्षता अटारी जोन 3 के निदेशक डॉ.अतर सिंह द्वारा की जाएगी। डॉ.सिंह ने बताया कि वार्षिक कार्यशाला से पहले समीक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रगति आख्या एवं कार्य योजना में कमियों को ठीक करना है जनपदों की आवश्यकता के अनुसार कार्य योजना तैयार कर संबंधित जनपदों के किसानो को लाभान्वित करने का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कुलपति डॉ.डी.आर.सिंह के निर्देशानुसार सभी कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा 110 किसानों की सफलता की कहानियां भी संकलित की जाएंगी इसके साथ ही फार्मर्स डायरेक्टरी भी बनाई जाएगी। इस अवसर पर सह निदेशक प्रसार डॉ.सुभाष चंद्रा, डॉ. पी.के.राठी, डॉ.अनिल कुमार सिंह, डॉ.एस.बी.पाल सहित सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक मौजूद रहे।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • शुक्रवार • 11 जून • 2021
5

वार्षिक कार्यशाला से पूर्व सीएसए के कृषि विज्ञान केंद्रों की समीक्षा

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्रों की वार्षिक कार्यशाला से पूर्व गुरुवार को उनके कार्यकलापों की समीक्षा की गई। निदेशक प्रसार समन्वयक डॉक्टर एके सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में सभी केंद्रों के वरिष्ठ वैज्ञानिकों व अध्यक्ष ने वर्ष 2020-21 की वार्षिक प्रगति आख्या एवं वर्ष 2021-22 की कार्य योजना प्रस्तुत की।

प्रदेश की समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों की वार्षिक कार्यशाला भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अटारी जोन 3 कानपुर द्वारा 15 से 17 जून के बीच आयोजित की जाएगी। वार्षिक कार्यशाला के मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उप निदेशक कृषि प्रसार डॉ. अशोक कुमार सिंह होंगे, जबकि अध्यक्षता अटारी जोन 3 के निदेशक डॉक्टर अतर सिंह करेंगे।निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉक्टर एके सिंह ने कहा कि मुख्य तौर पर जनपदों की आवश्यकता अनुसार कार्य योजना तैयार करने पर जोर है, जिससे संबंधित जिलों के किसान लाभांवित हो सकें। बैठक में उड़द, मूंग, तिल के बीज उत्पादन के अतिरिक्त प्रक्षेत्रों की मृदा उर्वरता बढ़ाने हेतु सुझाव दिए गए। विवि कुलपति डॉ. डीआर सिंह की मंशा के अनुसार प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा 110 कृषकों की सफलता की कहानी भी संकलित की जाएगी। फार्मर्स डायरेक्टरी भी बनाया जाना है। यहां सह निदेशक प्रसार डॉक्टर सुभाष चंद्रा, डॉ. पीके राठी, डॉ. अनिल कुमार सिंह, डॉ. एसबी पाल रहे।

लखनऊ संस्करण
वर्ष-05, अंक -226
शुक्रवार, 11 जून, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु

दैनिक भास्कर

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

For epaper → www.updainikbhaskar.com

सीएसए के कृषि विज्ञान केंद्रों की वार्षिक प्रगति समीक्षा बैठक सम्पन्न

भास्कर न्यूज

कानपुर। सीएसए के अधीन संचालित समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों की वर्ष 2020 -21 की वार्षिक प्रगति आख्या एवं वर्ष 2021-22 की कार्य योजना का आज प्रसार निदेशालय में निदेशक प्रसार/समन्वयक डॉक्टर ए के सिंह की अध्यक्षता में सभी केंद्रों के वरिष्ठ वैज्ञानिकों एवं अध्यक्ष द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। ज्ञात हो कि दिनांक 15 से 17 जून 2021 को प्रदेश की समस्त कृषि विज्ञान केंद्रों की वार्षिक कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अटारी जोन 3 कानपुर द्वारा ऑनलाइन संपन्न कराया जाएगा। इस वार्षिक कार्यशाला में मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उप महानिदेशक (कृषि प्रसार) डॉ अशोक कुमार सिंह उपस्थित रहेंगे। जबकि अटारी जोन 3 के निदेशक डॉक्टर अतर सिंह द्वारा कार्यशाला की अध्यक्षता की जाएगी। निदेशक प्रसार एवं समन्वयक डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि वार्षिक कार्यशाला के पूर्व समीक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रगति आख्या एवं कार्य योजना में कमियों को ठीक करना है जिससे कि प्रस्तुतिकरण में कोई कमी न रह जाए।